दैनिक भास्कर

21/8/14

मालपुरा. केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में छह राज्यों के पशु चिकित्साधिकारियों का बुधवार को भेड़ों में मद समकालन एवं कृत्रिम गर्भाधान की नवशोधित तकनीक का सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ।

छह राज्यों के 13 उच्चाधिकारियों को अविकानगर में प्रशिक्षण

मालपुरा | आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश व महाराष्ट्र तथा राजस्थान सहित छह प्रदेशों के पशु चिकित्सा विभाग के उच्च अधिकारी केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में भेड़ों में मद समकालन एवं कृत्रिम गर्भाधान की नवशोधित तकनीक का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

अविकानगर में यह प्रशिक्षण बुधवार को शुरू हुआ है। इसमें 13 प्रोफेसर, सहायक प्रोफेसर व पशु चिकित्साधिकारी सहित तकनीक अधिकारी तथा अनुसंधान सहायक भाग ले रहे हैं। प्रशिक्षण का शुभारंभ मुख्य अतिथि आयुक्त पशु पालन विभाग कृषि मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली प्रोफेसर सुरेश होन्नापागोल द्वारा किया गया। उन्होंने भेड़ों की उत्पादकता बढाने में अविकानगर संस्थान के वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की। अविकानगर संस्थान निदेशक डॉ. एसएमके नकवी ने भेड़ों में कृत्रिम गर्भाधान से मांस की मांग का असंतुलन समाप्त होने की जानकारी दी। शिविर के शुभारंभ अवसर पर संस्थान के सभी वरिष्ठ वैज्ञानिक थे।

राजस्थान पत्रिका
21/8/14

भेड़ों में भी कृत्रिम गर्भाधान जरूरी

मालपुरा के अविकानगर संस्थान में आयोजित प्रशिक्षण शिविर।

प्रशिक्षण शिविर शुरू

मालपुरा

jaipur@patrika.com

यहां केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में बुधवार को केन्द्रीय ऊन विकास मण्डल जोधपुर एवं समन्वयक भेड़ सुधार कार्यक्रम पर नेटवर्क परियोजना द्वारा कृत्रिम गर्भाधान विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर शुरू हुआ। मुख्य अतिथि पशुपालन विभाग कृषि मंत्रालय भारत सरकार के आयुक्त प्रो. सुरेश होन्नापागोल ने कहा कि संस्थान द्वारा भेड़ एवं ऊन विकास के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

इनमें भेड़ों में उत्पादकता बढ़ाने के लिए कृत्रिम गर्भाधान सबसे उपयुक्त विधि है। इस विधि के विकास से अधिक मांस उत्पादन होने से देश में खाद्य सुरक्षा की सुनिश्चितता होगी। संस्थान निदेशक डॉ. एस. एम. के. नकवी ने कहा कि गाय, भैंस, घोड़ा जैसे बड़े पशुओं में अनेक दशकों से कृत्रिम गर्भाधान किया जा रहा है, लेकिन भेड़-बकरियों में यह पद्धति अभी इतनी लोकप्रिय नहीं हो पाई है। भेड़-बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान विधि द्वारा अधिक मैमने लेकर असंतुलन को दूर किया जा सकता है। इस अवसर पर प्रभारी डॉ. देवेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक इंजीनियर विष्णु विनोद कदम ने भी विचार व्यक्त किए। प्रशिक्षण कार्यक्रम में आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र एवं प्रदेश के प्रोफसर, सहायक प्रोफसर, सहायक पशु चिकित्सा अधिकारी, तकनीकी अधिकारी एवं अनुसंधान सहायक भाग ले रहे हैं।